परिचय

बाइबल की सबसे अधिक उपेक्षित पुस्तक होने में संभवतः श्रेष्ठगीत ही है जो यहूदा की पत्री का प्रतिद्वन्दी है। जबकि यह तर्क देना अनियत होगा कि बाइबल की सभी पुस्तकों पर एक समान ज़ोर दिया जाना चाहिए, फिर भी यह सत्य है कि उन में से प्रत्येक के अध्ययन में कुछ न कुछ लाभ है। परमेश्वर ने अपनी दूरदर्शिता में यह सुनिश्चित किया कि यहूदा की पुस्तक नए नियम खण्ड में सम्मिलित हो। यदि और कोई कारण न भी हो तो भी मसीही समाज को इसी कारण से इस पर ध्यान देना चाहिए। किंतु, यहूदा छोटे से धार्मिक लेख से, जिसे सामान्य पत्रियों और प्रकाशितवाक्य के मध्य स्थान दिया गया है, बढ़कर है। इसमें एक सन्देश है जिसे मसीहियों को सुनना चाहिए।

यहूदा की व्याख्या के लिए पहला कदम, जैसा कि बाइबल के प्रत्येक लेख के लिए, होना चाहिए कि यह प्रश्न किया जाए कि यह लेख अपने आप को कैसे प्रस्तुत करता है। यहूदा की पत्री क्या छाप छोड़ती है? लेखक ने लेखनी काग़ज़ पर क्यों लगाई? क्या वह अपने पाठकों को प्रोत्साहित करना चाहता था? क्या उसका उद्देश्य और सिद्ध रीति से सिखाना था? क्या वह उनके साथ एक स्थाई संबंध बनाना चाहता था? क्या वह उन्हें खतरों के प्रति सचेत करना चाहता था? वर्तमान मसीही जैसे-जैसे ऐसे प्रश्नों के उत्तर देने पाएगा, उसकी समझ बढ़ती जाएगी। लेख के लिखे जाने के दो हज़ार वर्ष पश्चात जीने के कारण, लेख के लिखे जाने के समय की उस परिस्थिति को पुनः उत्पन्न करना, जिसके कारण यह लिखा गया, कोई छोटा कार्य नहीं है।

वर्तमान पाठक, यहूदा और उसके तत्कालीन पाठकों के बीच के संबंधों की गति को जितना पुनः उत्पन्न करने पाएंगे, वे उतना अधिक लाभान्वित होंगे। इसी कारण यह प्रयास न्यायसंगत है। वर्तमान पाठक, अन्य बातों के अतिरिक्त यह जानना चाहते हैं कि यहूदा और उसके पाठकों के मध्य के संबंध को कैसे बनाए रखा गया। उसे क्यों ज़ारी रखा गया? यहूदा और उसके पाठकों के मध्य उस समय की परिस्थिति को समझने से आज के पाठक इस पत्री के सन्देश को उसी प्रकार पढ़ने का प्रयास करेंगे जैसे प्रथम पाठकों ने किया था। जब वे ऐतिहासिक और साहित्यिक विषयों से निपट लेंगे तब ही वर्तमान पाठक आगे बढ़ने और पूछने पाएंगे कि पत्री के सन्देश का आज उनके अपने मसीही विश्वास और व्यवहार के साथ क्या तात्पर्य है।

पत्री का उद्देश्य

यहूदा की पत्री के सामान्य पठन से ही यह आभास हो जाता है कि जिस मसीही समाज को वह संबोधित कर रहा था उसे ऐसे लोगों से खतरा था जिन्हें लेखक "भक्तिहीन" (यहूदा 4) कहता है। यहूदा अपनी निन्दा में क्रूर था। यदि हम बाइबल की पुस्तकें क्रमवार पढ़ रहे हों, तो उसके शब्द हमें लगभग तुरंत ही कुछ पिछले पन्ने पलटने पर बाध्य करेंगे। यहूदा को जो इन "भक्तिहीन" मनुष्यों के विषय में कहना था वह लगभग उसके समान ही है जिन्हें पतरस ने "झूठे उपदेशक" कहा (2 पतरस 2:1)। जबकि दोनों मे से कोई भी लेखक इस बात के वर्णन में नहीं जाता है कि जिन्होंने मसीही समुदायों को परेशान किया था उन्होंने वास्तव में क्या सिखाया था, परन्तु प्रतीत होता है कि उन्होंने समान लोगों का ही वर्णन किया।

यहूदा के "भक्तिहीन" लोगों और पतरस के "झूठे उपदेशकों" ने मसीहियों को ही अपने लाभ के लिए प्रयोग किया (यहूदा 16; 2 पतरस 2:14), और अधिकारियों को तुच्छ जाना (यहूदा 8; 2 पतरस 2:10)। वे अनैतिक थे। उन्होंने मसीही सिद्धांत और मसीही व्यवहार के परस्पर आश्रित होने को धुँधला किया (यहूदा 12, 13, 18, 19; 2 पतरस 2:13, 14)। लगता है कि उन ही शिक्षाओं, संभवतः उन ही व्यक्तियों ने उन दोनों कलीसियाओं को प्रभावित किया था जिन्हें पतरस ने अपनी दूसरी पत्री द्वारा और यहूदा ने संबोधित किया है। यदि यही कारण था, तो यह विचार उठता है कि जिस उद्देश्य से 2 पतरस लिखा गया क्या उसी के कारण यहूदा भी लिखने को प्रेरित हुआ। एक लेखक के लिखने के उद्देश्य को जान लेने से दूसरे लेखक के लिखने के उद्देश्य को अधिक भली रीति से समझा जा सकता है।

यहूदा और 2 पतरस की पत्रियाँ किसी न किसी रीति से परस्पर संबंधित हैं। इनके सुराग ढूँढने के लिए हमारे पास इन दोनों के लेख ही हैं। यह कि इनमें बहुत कुछ साझा है एक स्पष्ट तथ्य है। यद्यपि इसका प्रमाण लाना होगा, परन्तु इनकी समानताओं को स्पष्ट करने में बहुत सहायता हो यदि दोनों लेखक एक ही स्थान पर रहते हों, समकालीन हों, परस्पर परिचित हों। यह संभावना अकल्पनीय नहीं है। कलीसिया के आरंभिक समय में, पतरस और यहूदा यरुशालेम की कलीसिया में गहराई से लिप्त थे। यदि दोनों पत्रियों की तिथि, कलीसिया के आरंभिक दो या तीन दशकों में निर्धारित हो सके, तो दोनों ही एक-दुसरे के कार्य से अवगत रहे होंगे। यदि दोनों ही पत्रियाँ एक बिल्कुल ही आरंभिक काल से हों जब यहूदी मसीहियत यहूदिया से बाहर फैल ही रही थी, तो इससे इन दोनों पत्रियों की परस्पर साहित्यिक निर्भरता को समझा जा सकता है। क्योंकि हम इन पत्रियों को विश्वसनीय मानते हैं – 2 पतरस इसी नाम के प्रेरित द्वारा लिखी गई और यहूदा याकूब के भाई, इसलिए यीशु के भी भाई, द्वारा – इससे यही संकेत मिलता है कि जब उन्होंने अपनी ये पत्रियाँ लिखीं तब दोनों यरुशालेम में ही रहते थे।

आज का पाठक न केवल यहूदा और 2 पतरस की समानताओं का आँकलन चाहेगा, वरन उनकी भिन्नताओं का भी। इन पत्रियों का निरीक्षण दिखाता है कि जिन कलीसियाओं को इनके लेखकों ने संबोधित किया उनके लिए खतरा बिल्कुल एक समान नहीं था। इसके अतिरिक्त, प्रत्येक लेखक चेहरे या प्रतिष्ठा द्वारा विभिन्न कलीसियाओं द्वारा में परिचित था। इसलिए दोनों लेखकों के प्रभाव का दायरा भिन्न था। पतरस कुछ कलीसियाओं को अधिक प्रभावी रीति से लिख सकता था और यहूदा कुछ अन्यों को। पत्रियाँ इस बात में समान हैं कि दोनों ही लेखकों ने झूठे उपदेशकों के प्रभाव से होने वाले अव्यवस्थित हालात को संबोधित किया। फिर भी 2 पतरस और यहूदा में कलिसियाओं द्वारा जिन खतरों का सामना किया गया उनकी अत्याधिक समानताओं के कारण यह निष्कर्ष नहीं निकाल लेना चाहिए कि एक ही पत्री दोनों कलीसियाओं की भिन्न परिस्थितियों को समुचित रीति से संबोधित कर सकती थीं।

दोनों ही लेखक चाहते थे कि उनकी कलीसियाएं यह जान लें कि जब उपदेशक (जो नए आए हैं) प्रेरितों के सन्देश से समझौता करते हैं, तो वे मसीही समुदायों के और उस प्रभु के, जिसकी वे सेवा करते हैं, मध्य अवरोध खड़े करते हैं (यहूदा 20, 21; 2 पतरस 2:20, 21)। न तो पतरस ने और न ही यहूदा ने झूठे उपदेशकों का वर्णन करने के लिए शब्दों में कोई नर्मी की। कलीसियाओं को परेशान करने वाले, कलीसियाओं के सामने अपने आप को चाहे जैसा प्रस्तुत करते हों वे निर्बुद्धि पशुओं से अधिक भले नहीं थे (2 पतरस 2:12), जिनके लिए "सदा काल तक घोर अन्धकार रखा गया है" (यहूदा 13)। यह काफी स्पष्ट है कि दोनों ही पत्रियों के विषय-वस्तु उपदेशक एक ही प्रकार के थे।

यद्यपि यहूदा और 2 पतरस की समान परिस्थिति से इन्कार नहीं किया जा सकता है, प्रत्येक पत्री के अपने उद्देश्य और विधियाँ हैं। यहूदा से अधिक पतरस झूठे उपदेशकों के उन दावों के बारे में, कि उनकी समझ प्रेरितों की गवाही (2 पतरस 1:3, 8) से बढ़कर थी चिंतित था। संभवतः अनावश्यक युगान्त संबंधी समझ ने झूठे उपदेशकों द्वारा प्रभु के लौटने का इन्कार करवाया (2 पतरस 3:3-10)। अपनी ओर से, यहूदा ने यहूदी साहित्य के सहारे, जिसका उसके पाठक लंबे समय से आदर करते आए थे, उनका सामना किया जो अपने अधर्मी दावों और व्यवहार द्वारा उन कलीसियाओं को, जिन्हें वह जानता था, परेशान कर रहे थे। प्रत्येक पत्री में अपनी विशिष्ट छाप है।

यहूदा और पतरस दोनों ने पाठकों को स्मरण करवाया कि उनके प्रथम शिक्षकों की प्रेरितों के विश्वास तक पूरी पहुँच थी (यहूदा 3; 2 पतरस 1:3)। इससे विपरीत दावे करने पर भी, सत्य के बारे में उनकी समझ में कोई कमी नहीं थी। दोनों ने ही अपने पाठकों से आग्रह किया कि जो कोई भी विनाशकारी पाखण्ड को लाए उनका वे तिरस्कार कर दें (यहूदा 4; 2 पतरस 2:1)। उनके लिए यह आवश्यक था कि वे "उस विश्वास के लिये पूरा यत्न करो जो पवित्र लोगों को एक ही बार सौंपा गया था" (यहूदा 3)।

श्रोता

जबकि यहूदा ने अपनी पत्री का संबोधन सामान्य शब्दों के साथ आरंभ किया, "उन बुलाए हुओं के नाम जो परमेश्वर पिता में प्रिय और यीशु मसीह के लिए सुरक्षित हैं" (यहूदा 1), उसने जो झूठे उपदेशकों का विवरण दिया उससे संकेत मिलता है कि वह पत्री आम मसीही समाज को नहीं लिख रहा था। उसके ध्यान में कुछ विशिष्ट पाठक थे। इसका एक चिन्ह है उसके द्वारा प्रेरणा रहित अप्रमाणित यहूदी ग्रन्थों से उद्धरण। संभवतः उसकी आशा थी कि उसके श्रोता यहूदी विश्वासी होंगे। अन्यजाति विश्वासियों की इथियोपिक हनोक, या अज़ंपशन ऑफ मोसेस के बारे में जानने की संभावना कम ही थी, जो कि अप्रमाणित कृतियाँ थीं, संभवतः जिनमें से यहूदा ने उद्धरण किया।

यह सुझाव देना यथोचित है कि दोनों 2 पतरस और यहूदा के श्रोता ऐसे भूगौलिक स्थान में रहते थे, जो एक-दूसरे के निकट थे। इससे दोनों पत्रियों की परस्पर साहित्यिक निर्भरता और समान चिंताओं को, जिनको वे संबोधित करती हैं, समझा जा सकता है। यह विवाद की बात है कि यहूदा, 2 पतरस और याकूब लगभग एक ही समय में लिखे गए, कलीसिया के जीवन के प्रारंभ में, इससे पहले कि अन्यजाति महत्वपूर्ण संख्या में मसीह में आए। यहूदा के आरंभिक शब्द संकेत करते हैं कि उसके तथा पाठकों के मध्य व्यक्तिगत संबंध था। उसने लिखा, "मैं तुम्हें लिखने में अत्यन्त परिश्रम कर रहा था।" फिर उसने कहा, "मैं ने तुम्हें यह समझाना आवश्यक जाना कि उस विश्वास के लिये पूरा यत्न करो" (यहूदा 3)। सर्वनाम "तुम" और "मैं" सामान्य हैं। इसका कम ही संकेत है कि यहूदा सामान्य श्रोताओं को लिख रहा था।

पत्री का लेखक

इस पत्री के लेखक ने अपनी पहचान बताई, "यहूदा की ओर से जो यीशु मसीह का दास और याकूब का भाई है" (यहूदा 1)। वर्तमान पाठक के दृष्टिकोण से (यहूदा यहूदियों में एक आम नाम था) यहूदा का आरंभिक कथन कम ही संतुष्टि देने वाला है, लेखक ने यह समझा कि उसके प्रथम पाठकों तक उसकी पहचान पहुँचाने के लिए यह पर्याप्त है। आरंभिक कलीसिया में याकूब का उल्लेख करने से, कम से कम उन कलीसियाओं में जहाँ यहूदी मसीही थे, ध्यान में वही व्यक्ति आता जिसने याकूब की पत्री लिखी थी, अर्थात, प्रभु का भाई। क्योंकि याकूब अधिक अच्छे से जाना जाता था, लेखक ने अपनी पहचान अपने भाई के नाम और अधिकार से जोड़कर बताई। मरकुस 6:3 में, यीशु और याकूब का एक भाई यहूदा भी था। जूड, जूडास का छोटा किया गया रूप है। वह मरकुस 6:3 की भाइयों की सूची में तीसरा है और मत्ती 13:55 की सूची में चौथा। जो भी यीशु के परिवार को जानते थे, उनके लिए यहूदा का अपने आप को याकूब का भाई कहना पर्याप्त था।

लूका ने अपने लेखन की दूसरी पुस्तक (प्रेरितों) की प्रस्तावना में, वह पुस्तक जो कलीसिया की स्थापना और विस्तार से संबंधित है, लूका ने पहला संकेत दिया कि यीशु के भाई विश्वासी बन गए थे। उसने कहा कि प्रभु के स्वर्गारोहण के बाद, यरूशलेम की उस अटारी में, यीशु के भाई प्रेरितों और अन्य विश्वासियों के साथ एकत्रित हुए (प्रेरितों 1:14)। इससे अभिप्राय यह है कि इस समय तक वे भी यह विश्वास करने लगे थे कि उनका भाई ही उनका प्रभु, इस्राएल का मसीहा है। जैसे-जैसे लूका ने कहानी की परतों को खोला, उसने यह स्पष्ट किया कि यीशु के भाइयों में से एक, याकूब, यरूशलेम की कलीसिया का अगुवा बन गया था। याकूब यरूशलेम की सभा में सम्मिलित हुआ (प्रेरितों 15:13-21), साथ ही पुस्तक में बाद में भी (प्रेरितों 21:18; देखें 1 कुरिन्थियों 15:7; गलतियों 1:19; 2:9, 12)। प्रेरितों में यीशु के किसी भी अन्य भाई का और कोई उल्लेख नहीं है।

पौलुस द्वारा अपनी मिशनरी यात्राएं आरंभ करने के कुछ वर्ष के पश्चात, उसने 1 कुरिन्थियों लिखा (लगभग 57 ई.)। यह पत्री संकेत देती है कि यीशु के भाई, जिनमें से एक यहूदा था, यात्री उपदेशक बन गए थे (1 कुरिन्थियों 9:5)। याकूब के भाई यहूदा के बारे में, उसके नाम से जानी जाने वाली पत्री के बाहर, हम बस इतना ही जानते हैं। और जानकारी के अभाव में, यह निष्कर्ष निकालना कि यहूदा का लेखक यूसुफ और मरियम का पुत्र, याकूब का भाई, और यीशु का अर्ध-भ्राता है, उचित लगता है। यह सही है कि यह निष्कर्ष विवादित है, परन्तु इसके विरुद्ध लाई जाने वाली आपत्तियाँ अजेय नहीं हैं।

यहूदा की तिथि और 2 पतरस से इसका संबंध

यहूदा द्वारा इस पत्री के लिखे जाने की तिथि अनिश्चित है। पत्री की सामग्री में कुछ भी ऐसा नहीं है जो लिखे जाने का समय निर्धारित करवा सके। किसी भी भौगोलिक स्थान या ऐतिहासिक घटना का उल्लेख नहीं है। बहुत अधिक सीमा तक यहूदा की तिथि के प्रश्न उसके 2 पतरस से जुड़े होने से संबंधित हैं।

जब यहूदा और 2 पतरस की तुलना की जाती है, तो यह प्रकट है कि दोनों कृतियों में कोई साहित्यिक संबंध है – अर्थात दोनों में से एक लेखक दूसरे द्वारा लिखी गई पत्री के बारे में जानता था और उसने उसका उपयोग किया। वैकल्पिक रीति से, दोनों ने ही किसी सामान्य स्त्रोत का प्रयोग किया। कुछ भी हो, जिन उपदेशकों की दोनों लेखक भर्त्सना करते हैं, उनके विवरण में इतनी समानता होना आकस्मिक नहीं हो सकता है। यहूदा की पच्चीस आयतों में से पन्द्रह में 2 पतरस के साथ महत्वपूर्ण समानन्तर हैं। इसके अतिरिक्त दोनों ही लेखकों ने उपदेशकों की भर्त्सना के लिए समान उदाहरण और विचार प्रयोग किए हैं। उन्होंने उन्हें लगभग उसी क्रम में भी रखा है। उन्होंने कलीसियाओं पर आए खतरे को समानता के साथ देखा। दोनों ने तर्क दिया कि जैसे परमेश्वर ने बीते समय में अनाज्ञाकारियों को दण्ड दिया था वैसे ही वह झूठे उपदेशकों को भी दण्डित करेगा। दोनों ने अपने सन्देश को आधार देने के लिए परमेश्वर द्वारा स्वर्गदूतों

तथा सदोम और अमोरा के न्याय का उपयोग किया। तुलना के बिन्दु यहाँ से आगे चलते हैं। इस पर कि 2 पतरस और यहूदा में साहित्यिक निर्भरता है विद्वानों द्वारा कम ही प्रश्न उठाए जाते हैं।

अनेकों वर्षों तक बाइबल के विद्यार्थी तर्क देते रहे कि पहले 2 पतरस लिखा गया और फिर यहूदा ने पतरस के कुछ शब्दों और उदाहरणों को अपने उद्देश्यों के लिए अपना लिया। इसे एक अच्छा विषय बनाया जा सकता है। जो यह मानते हैं कि यहूदा ने 2 पतरस का उपयोग किया वे अपनी बात दो मुख्य विषयों पर आधारित करते हैं: (1) प्रतीत होता है कि यहूदा ने प्रेरितों से निवेदन किया कि उसके लिखे हुए का समर्थन करें (आयतें 17, 18)। यह तर्क दिया जाता है कि आयत 17 के "प्रेरित" विशेषकर 2 पतरस की पत्री है। यहूदा ने रहस्यमय ढंग से पतरस के शब्दों पर आधारित होना स्वीकार किया। (2) क्योंकि पतरस, मसीह का प्रेरित होने के अतिरिक्त, कलीसिया में अधिक प्रमुख अगुवा था इसलिए यह अधिक संभव है कि यहूदा ने पतरस का प्रयोग किया होगा न कि इसका विपरीत।

हाल ही में, बारीकी से किए गए पत्रियों के साहित्यिक निरीक्षणों के आधार पर, विद्वानों में सहमति है कि 2 पतरस को कुछ सीमा तक यहूदा पर आधारित मान लेना अधिक सरल है न कि इसके विपरीत। एक बात तो यह है कि, यह समझना कठिन है कि यहूदा 2 पतरस को, यदि वह उसे स्त्रोत बना रहा है तो, संक्षिप्त क्यों करेगा। तर्क आगे कहता है कि, यह अधिक संभव है कि पतरस ने यहूदा को और विस्तृत किया, न कि यहूदा ने 2 पतरस को संक्षिप्त किया। इसके साथ ही, तर्कों में प्रत्येक दस्तावेज़ के यूनानी लेखों का बारीकी से शब्द-ब-शब्द तुलना किया जाना सम्मिलित है। यह बहुत व्यक्तिपरक निर्णय की माँग करता है। फिर भी, यह मत विद्वानों की व्याख्याओं में अधिक प्रबल हो गया है कि यहूदा पहले लिखा गया था।[1] कम ही यह तर्क देते हैं कि 2 पतरस और यहूदा दोनों ने एक सामान्य तीसरे स्त्रोत से लिया है, यद्यपि इस संभावना को हल्के में बर्खास्त नहीं किया जा सकता है।

यहूदा और 2 पतरस की तुलना		
यहूदा		2 पतरस
4	झूठे उपदेशक स्वामी का इनकार करते हैं।	2:1
4	उनका दण्ड पहले ही से लिखा गया था।	2:3
6	विद्रोही स्वर्गदूतों को न्याय तक बंधनों में रखा गया है।	2:4
7	सदोम और अमोरा न्याय के दृष्टांत हैं।	2:6
8	ये लोग अपने शरीर को अशुद्ध करते और प्रभुता को तुच्छ जानते हैं।	2:10
9	स्वर्गदूत बुरा-भला कहकर दूसरों पर दोष नहीं लगाते हैं।	2:11
10	ये लोग जिन बातों को नहीं जानते उनको बुरा-भला कहते हैं।	2:12
10	वे स्वभाव ही से अचेतन पशुओं के समान हैं।	2:12
11	वे बिलाम के समान भ्रष्ट हो गए हैं।	2:15
12	वे तुम्हारे साथ खाने-पीने में समुद्र में छिपी चट्टानों के सरीखे हैं।	2:13
12	वे निर्जल बादल हैं जिन्हें हवा उड़ा ले जाती है।	2:17
13	उनके लिए सदा काल का घोर अंधकार रखा गया है।	2:17
16	वे अपनी अभिलाषाओं के अनुसार चलने वाले और घमंड की बातें बोलने वाले हैं।	2:18
17	प्रेरितों की कही बातों को स्मरण रखो।	3:2
18	पिछले दिनों में ऐसे ठट्ठा करने वाले होंगे जो अपनी अभिलाषाओं के अनुसार चलेंगे।	3:3

पतरस ने अपने दृष्टांत तिथि क्रमानुसार लगाए परन्तु यहूदा ने नहीं।	
यहूदा	2 पतरस
1. जंगल में इस्राएल (आयत 5)	1. –
2. विद्रोही स्वर्गदूत (आयत 6)	2. विद्रोही स्वर्गदूत (2:4)
3. –	3. नूह (2:5)
4. सदोम और अमोरा (आयत 7)	4. सदोम और अमोरा (2:6)
5. –	5. लूत (2:7, 8)
6. मूसा (आयत 9)	6. –
7. कैन (आयत 11)	7. –
8. बिलाम (आयत 11)	8. बिलाम (2:15, 16)
9. कोरह (आयत 11)	9. –
10. हनोक (आयत 14)	10. –

जो इसी नाम से लिखी गई पत्री का लेखक होने के लिए याकूब के भाई यहूदा को बर्खास्त करते हैं, सामान्यतः वे ही पतरस को 2 पतरस का लेखक होने से भी बर्खास्त करते हैं। कई विद्वानों को दोनों पत्रियों में ज्ञानवादी उपदेशक दिखाई देते हैं और उनका मानना है कि ये दोनों पत्रियाँ या तो प्रथम शताब्दी के अन्त में या फिर दूसरी शताब्दी के आरंभ में लिखी गई थीं। किंतु अधिकाधिक विद्वान यह मान रहे हैं कि न तो यहूदा और न ही पतरस में कोई ज्ञानवाद की शिक्षाएं प्रगट हैं। केवल शब्द "समझ" (γνῶσις, *ग्नोसिस)* का प्रयोग होने के कारण यह ज्ञानवाद का खण्डन नहीं है। उदाहरण स्वरूप, ज्ञानवाद का एक आवश्यक भाग है द्वैतवाद। द्वैतवाद पदार्थ और आत्मा में स्पष्ट भेद करता है; भौतिक को अपने आप में बुरा देखा जाता है, और आत्मिक को भला। न तो 2 पतरस में और न ही यहूदा में कोई द्वैतवाद है। जैसे यूनानी भाषा 2 पतरस का गुण है वह कोई तर्क नहीं है कि यह पत्री पतरस की मृत्यु के पश्चात लिखी गई थी, और न ही यह कलीसियाओं में ज्ञानवाद के प्रभाव के समर्थन का तर्क है।

कुछ लोग जो यहूदा और 2 पतरस में साहित्यिक संबंध निकाल कर लाते हैं उनकी अप्रत्यक्ष धारणा है कि दोनों पत्रियों के मध्य अनेकों वर्षों, संभवतः दशकों का अन्तर है। यह तर्क सामान्यतः इस निष्कर्ष पर आधारित है कि 2 पतरस छद्मनाम से है और इसकी तिथि दूसरी शताब्दी में काफी आगे की है। यह तर्क दिया जाता है कि यहूदा के श्रोता यहूदी थे[2] और 2 पतरस के अन्यजाति।[3] यदि ऐसा है तो यहूदा के प्रचलन में आने के लिए समय की आवश्यकता होगी, इससे पहले कि वह उन लोग या लोगों द्वारा प्रयोग होती जिन्होंने 2 पतरस को लिखा। यदि 2 पतरस छद्म नाम के अन्तर्गत है, और दोनों पत्रियों के लिखे जाने के मध्य लंबा समय है, तो यह तर्क ठोस है। परन्तु इनमें से कोई भी निष्कर्ष विवादास्पद होने से बाहर नहीं है; दोनों ही गंभीर चुनौतियों के लिए खुले हैं।

यह कोई आवश्यक नहीं है कि उनके परस्पर साहित्यिक निर्भरता के लिए 2 पतरस और यहूदा के मध्य लंबा अन्तराल डाला जाए। यह तर्क भी दिया जा सकता है कि उनके मध्य की समानताएं दिखाती हैं कि वे दोनों लगभग एक ही समय पर लिखी गईं। यदि पत्रियाँ ऐसे समय में लिखी गईं जब दोनों लेखक यरूशलेम में थे, और न केवल उस शहर की कलीसिया के वरन आसपास के क्षेत्र की कलीसियाओं के भी अगुवे होने का कार्य कर रहे थे, तो यह देख पाना कठिन नहीं है कि एक ने दूसरे के कुछ शब्दों का उपयोग करने का चुनाव किया। यदि और कोई कारण से नहीं तो केवल इस कारण से कि इससे दोनों ही अगुवों के अधिकार को बल मिलेगा। अन्ततः इसका कोई विशेष महत्व नहीं है कि कौन सी पत्री पहले आई। यद्यपि हम पत्रियों की तिथि के लिए निश्चित नहीं हो सकते हैं, परन्तु यदि वे याकूब के समान प्रवासी यहूदी मसीहियों को संबोधित करती हैं, तो उनकी समानताओं को समझना कठिन नहीं है। और अधिक अच्छे प्रमाणों के अभाव में, हमारा सुझाव है कि दोनों पत्रियाँ कलीसिया के प्राथमिक दशकों के अन्त के समय की हैं। यह कि ऐसी स्थिति होना संभव है, जो हम आरंभिक कलीसिया के बारे में जानते हैं उससे यह स्पष्ट है।

प्रेरितों की गवाही यह प्रगट कर देती है कि आरंभिक वर्षों में यहूदिया के आस-पास के यहूदी समाज में कलीसिया का शीघ्रता से विस्तार हुआ। मसीहियों को बन्दी बनाने के लिए की गई पौलुस की दमिश्क यात्रा से स्पष्ट है कि मसीही विश्वास पलिस्तीन के आस-पास के प्रवासी यहूदियों में आरंभिक समय में ही फैल चुका था (प्रेरितों 9:1, 2)। गलतियों 2:1 की चौदह वर्षीय अवधि का हिसाब देने के लिए हमें पौलुस के परिवर्तन की तिथि को मसीह की मृत्यु के लगभग पहले पाँच वर्षों के अन्दर ही मानना होगा। इसका अर्थ है कि, क्रूस पर चढ़ाए जाने के पाँच वर्ष के अन्दर ही, मसीही विश्वास को स्वीकार कर लेने वाले दमिश्क में रहने वाले यहूदी इतने हो गए थे कि वे यरूशलेम के अधिकारियों की दृष्टि में आ गए। इसके अतिरिक्त, प्रवासी यहूदियों में मसीही विश्वास के फैलने के प्रमाण हमें यरूशलेम से यहूदी विश्वासियों के तित्तर-बित्तर होने के समाचारों से मिलते हैं। यद्यपि जो स्तिफनुस की मृत्यु के पश्चात तित्तर-बित्तर हुए उन्होंने अन्ताकिया के आस-पास के अन्यजातियों को प्रचार किया, परन्तु यह स्पष्ट है कि यहूदी समाज में भी मार्ग बन गए थे (प्रेरितों 11:19, 20)।

यह एक सुरक्षित निष्कर्ष है कि यीशु के क्रूस पर चढ़ाए जाने के प्रथम दो दशकों में ही, अन्ताकिया और दमिश्क जितने उत्तरी तथा पूर्वी इलाकों तक में, यहूदी मसीही विश्वासी बहुतेरे यहूदी अराधनालयों का महत्वपूर्ण अंश हो गए थे। साथ ही, यह असंगत है कि यरूशलेम के यहूदी अधिकारियों ने इस इलाके के मसीही सन्देश को बिना चुनौती दिए छोड़ दिया था। मसीही सन्देश से यहूदिया के उत्तर में स्थित सीरिया के बहुतेरे अराधनालयों में अव्यवस्था हुई होगी। यह बात पर संदेह है कि शाऊल ही एक मात्र शख्स था जिसे यहूदी अधिकारियों ने क्षति रोकने के लिए भेजा था। इसके अतिरिक्त, यह असंगत है कि यरूशलेम के अधिकारियों ने इसे रोकने के लिए केवल क्रूर बल – पकड़ लेना, बन्दी बनाना, और मसीहियों को मार डालना, का ही प्रयोग किया होगा। संभवतः उन्होंने ऐसे उपदेशकों को भी भेजा या प्रोत्साहित किया होगा जो यह दावा करें कि प्रेरित और उनके प्रतिनिधि उन परिस्थितियों से ठीक से अवगत नहीं थे जिनके कारण यीशु को क्रूस पर चढ़ाया गया। मुद्दा समझ का था। जो मसीह का प्रचार करते थे वे नहीं जानते थे कि यरूशलेम में क्या हुआ जिसका परिणाम इस उद्दण्ड गलीली की मृत्यु था।

यरूशलेम से आए यहूदी उपदेशकों के अतिरिक्त, जो मसीही मिशनरियों के प्रभाव को रोकने का प्रयास कर रहे थे, यह भी संभव है कि कुछ प्रवासी यहूदियों ने, जिन्होंने मसीही सन्देश का आलिंगन किया था, अपनी नई प्राप्त स्वतंत्रता का अनुचित उपयोग किया। अध्ययन ने यह स्पष्ट कर दिया है कि दोनों पलिस्तीनी और प्रवासी यहूदी मत बहुत भिन्न थे।[4] यह हो सकता है कि अनेकों अराधनालयों में ऐसे लोग थे जो अपने पित्रों के धर्म को, अन्यजाति धर्मों और नैतिकता को और अधिक स्वीकार करने की ओर ले जाना चाहता थे। वे भी, यरूशलेम के यहूदी अधिकारियों से भिन्न कारणों से, ऐसी समझ का दावा रखते थे जो प्रेरितों और यरूशलेम के कलीसियाई अगुवों से भी और आगे थी। जिन्होंने अन्य जाति

विचारधाराओं को अपनाया था, उन्होंने मसीही शिक्षकों के अतिक्रमण को उस समय के धार्मिक परिवेश के अनुकूल विचारों के लिए खुला द्वार देखा। उन्होंने अन्य बातों के मध्य मसीही शिक्षाओं को कुछ नरम नैतिक नियमावली के लिए एक खुले द्वार के रूप में देखा।

प्रेरितों की शिक्षा में एक बात थी जिससे वह आलोचना के लिए अधिक संवेदनशील थी। प्रेरितों ने प्रतिज्ञा की थी कि यीशु लौट कर आएंगे, परन्तु वे आए नहीं थे। यहूदा ने अपनी पत्री लिखी और पतरस ने वह लिखा जिसे हम 2 पतरस कहते हैं जिससे कि वे प्रेरितों की समझ की, पुनरुत्थान के लिए उनकी गवाही की, मसीही सन्देश की नैतिक माँगों की, और प्रभु के लौट कर आने की प्रतिज्ञा की (2 पतरस 3:11-13) पुष्टि करें। यहूदा में यह कम स्पष्ट है कि झूठे उपदेशक प्रभु के लौट कर आने पर विवाद उत्पन्न कर रहे थे, यद्यपि यह उनके "हमारे एकमात्र स्वामी और प्रभु यीशु मसीह" (यहूदा 4) के इन्कार का तात्पर्य भी हो सकता है। यदि ऐसा है तो, यह सुझाव देना यथोचित होगा कि 2 पतरस, यहूदा, और याकूब कलीसिया की आरंभिक तिथि से हैं, संभवतः 40 के आरंभ या 50 के आरंभ से।

यदि 2 पतरस और यहूदा समान परिस्थितियों को संबोधित करते हैं, तो यह सोचना यथोचित है कि वे लगभग समान समय में लिखे गए। लगता है कि यहूदा ने यहूदी श्रोताओं को लिखा, यहूदी परिप्रेक्ष्य से लिखा। दूसरा पतरस यहूदा की तुलना में अधिक यूनानी सी भाषा प्रयोग करता है, परन्तु यह भी यहूदी विचारधारा वाले संसार को मानता है। ऐसे बहुत से यहूदी थे, कुछ सीरिया/पलिस्तीन में, जो यूनानी संस्कृति में पूर्णतः लीन थे। यह आवश्यक नहीं है कि यूनानी सी भाषा का तात्पर्य गैरयहूदी श्रोता हैं।

विधर्मियों का चरित्र और व्यवहार

यहूदा का एक विशिष्ट गुण है कि जो पत्री उसने वास्तव में लिखी है, लगता है कि वह उससे भिन्न पत्री लिखना चाहता था। तत्कालीन विषम परिस्थितियों ने उससे झूठे उपदेशकों के विषय को संबोधित करवाया। जैसा कि 2 पतरस में भी है, उपदेशकों के चरित्र के बारे में उनकी शिक्षाओं से अधिक कहा गया है। वे असंतुष्ट, कुड़कुड़ाने वाले, और अपनी अभिलाषाओं के अनुसार चलने वाले थे (यहूदा 16; 2 पतरस 2:14)। प्रत्यक्षतः उन्होंने अनुग्रह के सिद्धांत को गलत समझा था (यहूदा 4, 12, 13; 2 पतरस 2:19)। केवल वे खुली रीति से शरीर की अभिलाषाओं के अनुसार चलते थे, वरन वे यह भी शिक्षा देते थे कि ऐसा व्यवहार मसीही चाल चलन में स्वीकार है।

दोनों यहूदा और पतरस ने परमेश्वर द्वारा स्वर्गदूतों के न्याय की ओर ध्यान खींचा (यहूदा 6; 2 पतरस 2:4)। इससे कुछ ने निष्कर्ष निकाला है कि झूठे उपदेशक उनसे संबंधित किसी पाखण्ड का समर्थन करते थे। क्योंकि ज्ञानवाद में परमेश्वर और मनुष्यों के बीच मध्यस्थता करने वाले जीवों का प्रमुख स्थान है,

कुछ ने इसे ज्ञानवाद के प्रभाव के रूप में देखा है। परन्तु, इस काल के यहूदी लेखों में बहुतायत से परमेश्वर द्वारा स्वर्गदूतों के न्याय के विषय में कल्पनाओं की गवाही है। स्वर्गदूतों का हवाला देना अपने आप में ज्ञानवाद के प्रभाव का चिन्ह नहीं है।

यहूदा द्वारा अप्रमाणिक ग्रन्थों का उपयोग

संभवतः नए नियम के किसी भी अन्य लेखक से अधिक, यहूदा ने असैद्धांतिक यहूदी साहित्य का उपयोग किया। एक बात तो यह है कि यह पत्री "प्रधान स्वर्गदूत" मीकाईल और शैतान के मध्य मूसा के शव पर विवाद का उल्लेख करती है (आयत 9), जो ऐसा विवाद है जिसका पुराने नियम में कहीं कोई उल्लेख नहीं है। यह व्यापक रीति से माना जाता है कि लेखक ने ऐसी घटना को उद्धृत किया जिसका अधिक वर्णन एक ऐसी कृति में है जिसे आरंभिक मसीही दायरों में अज़ंपशन ऑफ मोसेस के नाम से जाना जाता था। परन्तु, इसके बारे में, बहुत अनिश्चितता है।

यह अनिश्चित है कि अज़ंपशन ऑफ मोसेस की कोई प्रति बची है कि नहीं। बचा हुआ एक दस्तावेज़ है जिसे टेस्टामेन्ट ऑफ मोसेस या अज़ंपशन ऑफ मोसेस कहा जाता है। इसका भी एक भाग ही समय के बीतने को झेल पाया है। इस दस्तावेज़ का समय अनिश्चित है। कुछ इसे मैकबियन साम्राज्य के समय जितना आरंभिक मानते हैं तो अन्य दूसरी शताब्दी ईस्वी जितना पुराना। जो भाग बचा है वह मूसा द्वारा यहोशू को दिया गया अलविदा सन्देश प्रतीत होता है। उसमें मूसा के स्वर्ग ले जाए जाने जैसा कुछ नहीं है, जिसकी आशा "अज़ंपशन" से की जाती है। जो अंश हमारे पास आया है, उसमें मीकाईल और शैतान के मध्य मूसा के शव को लेकर किसी विवाद की कहानी नहीं है। या तो यह कहानी बचे हुए अंश से खो गई है, या फिर यहूदा किसी ऐसे दस्तावेज़ का उल्लेख कर रहा है जो पूर्णतः खो गया है। आरंभिक कलीसिया के लेखक एक कृति का उल्लेख करते हैं जिसे वे अज़ंपशन ऑफ मोसेस कहते थे।[5] लेकिन यह स्पष्ट नहीं है कि क्या वह कृति वही है जिसका अंश हमारे पास है।

यहूदा ने स्पष्टतया एक दस्तावेज़ से उद्धृत किया है जो कि 1 हनोक या इथियोपिक हनोक के नाम से जानी जाती थी। ऐसे प्रमाण हैं कि वह कृति यहूदी मसीही दायरों में बहुतायत से प्रयोग होती थी तथा आदरणीय थी। उसे इथियोपिक कलीसिया ने उसकी संपूर्णता में बचा कर रखा है और उसे प्रामाणिक माना जाता है। इथियोपिक भाषा के बाहर वह दस्तावेज़ कुछ अंश में यूनानी और लतीनी लेखों में बचा हुआ है। यहूदा ने 1 हनोक 1:9 को उद्धृत किया। हनोक एक जटिल कृति है जो अपने आप को हनोक का लेख के नाम से प्रस्तुत करती है, जो आदम से सातवीं पीढ़ी था। यह कई लोगों का मिला – जुला लेख है संभवतः जिसका प्रथम भाग लगभग 170 ई.पू. लिखा गया था। इसके बाद के भाग मसीह से बाद में लिखे गए प्रतीत होते हैं। यह कृति, अन्य बातों के

अतिरिक्त, यहूदी लोगों का इतिहास बयान करती है। यह अन्तिम न्याय और विनाश संबंधी कृति है जिसमें दुष्टों पर परमेश्वर के आने वाले न्याय से संबंधित बहुत कुछ कहा गया है। (यहूदा द्वारा हनोक को उद्धृत करने संबंधी विस्तृत चर्चा के लिए आयत 14, 15 पर टिप्पणियाँ देखें।)

रूपरेखा

I. अभिनंदन: जो बुलाए गए हैं (आयतें 1, 2)

II. पत्री का उद्देश्य परिभाषित (आयतें 3, 4)
   A. विश्वास के लिए पूरा यत्न (आयत 3)
   B. कलीसिया में झूठे उपदेशकों का छिपकर आ जाना (आयत 4)

III. झूठे उपदेशकों की भर्त्सना (आयतें 5-16)
   A. परमेश्वर द्वारा अनाज्ञाकारियों को दोषी ठहराना (आयतें 5-7)
      1. अविश्वासी इस्राएली (आयत 5)
      2. बलवाई स्वर्गदूत (आयत 6)
      3. व्यभिचारी सदोम और अमोरा (आयत 7)
   B. झूठे उपदेशकों का एक विवरण (आयतें 8-13)
      1. अधिकारियों का तिरस्कार (आयतें 8-10)
      2. परमेश्वर के न्याय के अंतर्गत (आयत 11)
         a. "कैन की सी चाल"
         b. "बिलाम की गलती"
         c. "कोरह का विरोध"
      3. स्वार्थी, निष्फल, और व्यभिचारी (आयतें 12, 13)
         a. "छिपी हुई चट्टानें"
         b. "निर्जल बादल"
         c. "पतझड़ के निष्फल पेड़"
         d. "समुद्र के प्रचंड हिलकोरे"
         e. "डांवांडोल तारे"
   C. भक्तिहीनों के न्याय के विषय में हनोक की भविष्यवाणी (आयतें 14-16)

IV. एक तुलना: फूट डालने तथा ठट्ठा करने वाले और विश्वासयोग्य विश्वासियों के मध्य तुलना (आयतें 17-23)
   A. फूट डालने तथा ठट्ठा करने वालों को चेतावनी (आयतें 17-19)
      1. प्रेरित की चेतावनी (आयतें 17, 18)
      2. इन मनुष्यों का एक विवरण (आयत 19)

a. “जो फूट डालते हैं”
b. “शारीरिक”
c. “जिनमें आत्मा नहीं”

B. विश्वासयोग्य विश्वासियों को निर्देश (आयतें 20-23)
1. विश्वास में उन्नति करो (आयतें 20, 21)
a. “पवित्र आत्मा में प्रार्थना करते हुए”
b. “अपने आप को परमेश्वर के प्रेम में बनाए रखो”
c. “यीशु मसीह की बाट जोहते रहो”
2. औरों के प्रति दयावंत और कुछ को आग में से झपट कर निकाल लो (आयतें 22, 23)

V. अंत में ईश्वरीय स्तुति (आयतें 24, 25)

समाप्ति नोट्स

[1]देखें जे. एन. डी. केली, *ए कॉमेन्ट्री ऑन द एपिसल्स ऑफ़ पीटर एण्ड जूड*, ब्लैक्स न्यू टेस्टामेन्ट कॉमेन्ट्रीस (लंडन: एडम & चार्ल्स ब्लैक, 1969), 227. केली ने कहा कि “यहूदा का पहले होना लगभग सर्वसम्मति से मान लिया गया है।” [2]*द एन्कर बाइबल डिक्शनरी*, एड. डेविड नोएल फ्रीडमैन (न्यू यॉर्क: डबलडे, 1992), 3:1102 में देखें रिचर्ड जे. बौकहौम, “जूड, एपिसल ऑफ।” बौकहौम का सुझाव था कि यहूदा के प्रथम पाठक अन्यजाति वातावरण में रहने वाले यहूदी मसीही थे। [3]*द एन्कर बाइबल डिक्शनरी*, एड. डेविड नोएल फ्रीडमैन (न्यू यॉर्क: डबलडे, 1992), 5:287. में देखें जौन एच. ईलियट, “पीटर, सेकेण्ड एपिसल ऑफ।” ईलियट का तर्क था कि 2 पतरस के प्रथम पाठक “सांस्कृतिक रूप से बहुविचारवादी यूनानी वातावरण” में रहते थे। [4]उदाहरण के लिए लियोनार्ड रोस्ट द्वारा निरीक्षण किए गए भिन्न प्रकार के दस्तावेज़ों को लीजिए, *जूडाइज़्म आउटसाइड द हूब्रयू कैनन*, ट्रान्स. डेविड ई. ग्रीन (नैशविले: ऐबिंगडन, 1971). [5]केली ने सिकन्दरिया के क्लेमेंट, औरिजेन, और अन्यों की सूची दी। (केली, 265.)